FINDINGS FORRMET TO EXAMMINITION

NOTIFICATION NO: 599/2026

NOTIFICATION DATE: 12-05-2026

NAME OF SCHOLAR: SUMAN KUMARI

NAME OF SUPERVISOR: PROF. INDU VIRENDRA

NAME OF CO-SUPERVISOR:

NAME OF DEPARTMENT: HINDI

TOPIC OF RESEARCH: KRISHNA SOBATEE AUR MAITREYEE PUSHPA KE UPANYASON MEIN LOK SANSKRITI KA TULNATMAK ADHYAYAN

FINDINGS

बीज शब्द : रीति-रिवाज, लोक-जीवन, ग्रामीण जीवन, आंचलिकता, स्त्री-जीवन ।

लोक संस्कृति से अभिप्राय रीति-रिवाज, संस्कार और परम्परा से है। लोक संस्कृति दो शब्दों 'लोक' और 'संस्कृति' से मिलकर बना है। लोक का मूल अर्थ जनसामान्य से जुड़ा है। संस्कृति का मूल अर्थ पहचान से है। लोक संस्कृति हमारी सांस्कृतिक धरोहर है जो पीढ़ियों से चली आ रही है। लोक संस्कृति एक ही धरा के दो रूप हैं, वस्तुत : लोक संस्कृति का मूल 'सहज विश्वास' है, वहां तर्क का स्थान नहीं। हमारी संस्कृति ने 'वसुधैव कुटुंबकम' तथा 'सर्वे भवंतु सुखिन:' की परिकल्पना की है। लोक संस्कृति मानवीय मूल्यों के साथ ही निभाई जाती है। लोक संस्कृति का संबंध मुख्य रूप से गांवों से है। ग्रामीण

जीवन में लोक संस्कृति जीवित है। लोक संस्कृति में प्रत्येक समाज के देवी-देवताओं या महापुरुषों की कथाओं को नृत्य, गीत या गाथाओं के माध्यम से व्यक्त करने की प्रथा रही है। ग्रामीण समाज अपनी भावनाएं गीत, नृत्य, शिल्प, संगीत, चित्रकला इत्यादि के माध्यम से व्यक्त करते रहे हैं। पुराणों, रामायण और महाभारत में अनेक लोक गाथाएं साहित्यिक रूप में प्रस्तुत की गई हैं, जिससे ग्रामीण समाज प्रेरित होता है। लोक-संस्कृति लोक परम्पराओं, लोक साहित्य, लोक नाट्य, लोक-कला, लोक कथा-लोकगीत में सहज आत्मीयता के साथ मिलीजुली है।

कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यासों के माध्यम से दो विपरीत क्षेत्रों की लोक संस्कृति के मध्य समानता और असमानताओं का विस्तृत रूप से उल्लेख किया है। कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा अपनी रचनाओं में गांव की संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं का विस्तृत उल्लेख करती हैं। दोनों लेखिकाओं के उपन्यासों में चित्रित किए गए पात्र यथार्थ के धरातल पर खरे उतरते हैं। कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा उपन्यास लेखन में रचना को आंचलिक स्वरूप प्रदान करती हैं। दोनों लेखिकाएं उपन्यासों में प्रमुख रूप से स्थानीय परिवेश को समग्रता से चित्रित करती हैं। इस प्रकार लोक संस्कृति का चित्रण करने वाली रचना स्थानीय परिवेश पर केन्द्रित होती है। दोनों ही लेखिकाओं का हिन्दी साहित्य जगत में विशेष स्थान है। अपनी भाषा शैली व रचनात्मकता से उपन्यास में कथा, कल्पना व यथार्थ का सुंदर चित्रण मिलता है। कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा विविध विषयों को आधार बना कर भारतीय समाज की विविधता का वर्णन करती हैं।